जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : ₹ रुपये

ताप–भाप और आप

लाल्टू

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ताप, भाप और आप : लाल्टू
Tap,Bhap Aur Aap: Laltu

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: शहबाज़
लेजर ग्राफि□स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: *1999*

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मु य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलŽध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: **2**

*Published by **Bharat Gyan Vigyan Samithi**, **Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,***
email: bgvs@vsnl.net

ताप–भाप और आप

लाल्टू

ताप–भाप और आप

(यह नाटक नुक्कड़ शैली में है। खेलने और देखने वालों के बीच संवाद इसमें जरूरी है, खुली हवा और कम नमी के दिन ही यह नाटक खेला जाए।)

(दर्शकों में कुछ पात्र बातचीत शुरू करते हैं।)

एक – अब पढ़-लिख तो सकते हैं हम, कुछ बातें भी सीखें।

दो – पर सिखलाए कौन?

तीन – अरे! वह शहरी छोकरा कहता था न कि हमें अपने ही जीवन से कुछ सीखना है!

चार – हमारे तो दिमाग में बात ही नहीं आती।

पाँच – कैसे नहीं आती? चलो, आओ! हम बतलाते हैं तु हें ज्ञान की बात!

सभी (समवेत हँसी)

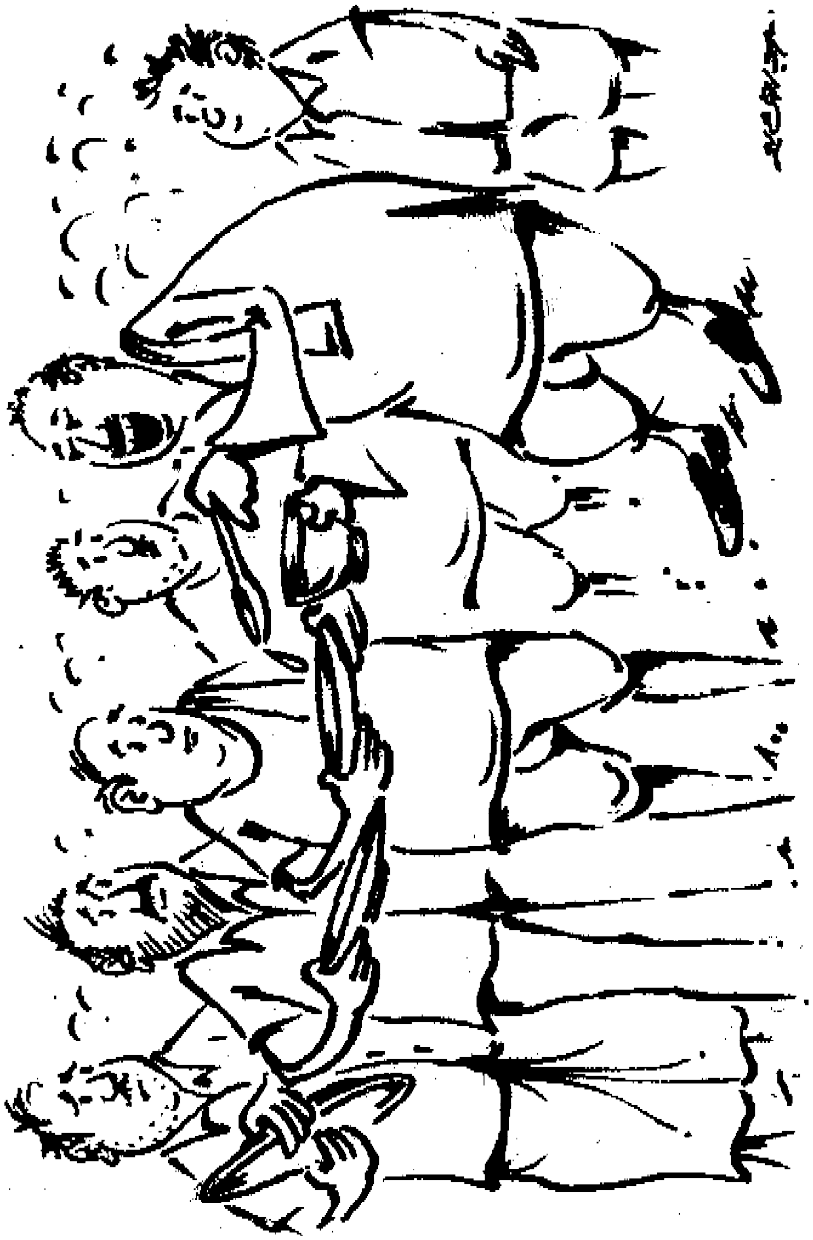

पाँच – लो, तुम लोग तो हँस पड़े। अरे! मैं सचमुच एक बात बतलाऊँगा तु हें आज।

एक – यह इसको कौन सी देब-दिस्टी मिल गई आज!

दो – देब-दिस्टी नहीं, दिव्य-दिरसटी!

तीन – ओ नहीं गुरु दिव्य-दृष्टि!

एक – हम तो अपनी ही बोली में बोलेंगे – दिब-दिरसटी!

पाँच – यार, तुम लोगों ने तो वह कहावत ही सिद्ध कर दी कि भैंस के आगे बीन बजाओ, भैंस बैठ पगुराए! अरे भाई, मेरी बेटी है न-स्कूल जाती है – उसी की पढ़ाई में है एक बात, मुझे बड़ी भली लगी!

चार – तू स्कूल की किताब कब से पढ़ने लगा?

पाँच – चल, तू खुश हो जा! मैंने नहीं पढ़ा, मेरी बेटी ने बतलाया; पर यह भी ठीक है कि उसकी बात सुनकर लाख टके की बात मेरे दिमाग में आई।

सभी (समवेत) – चलो, चलो! बतलाओ भाई!

पाँच – तो ठीक है, कोई ला दो मुझे तीन पलेटें, एक प्याला पानी और एक च मच!

(एक आदमी दौड़ कर जाता है और यह सामान ले आता है।)

पाँच – **(सामान लेते हुए)**– अच्छा, तो हटो जरा सा, मुझे बीच में आने दो।

(फिर 'एक' को पहली प्लेट और 'दो' को दूसरी प्लेट थमाते

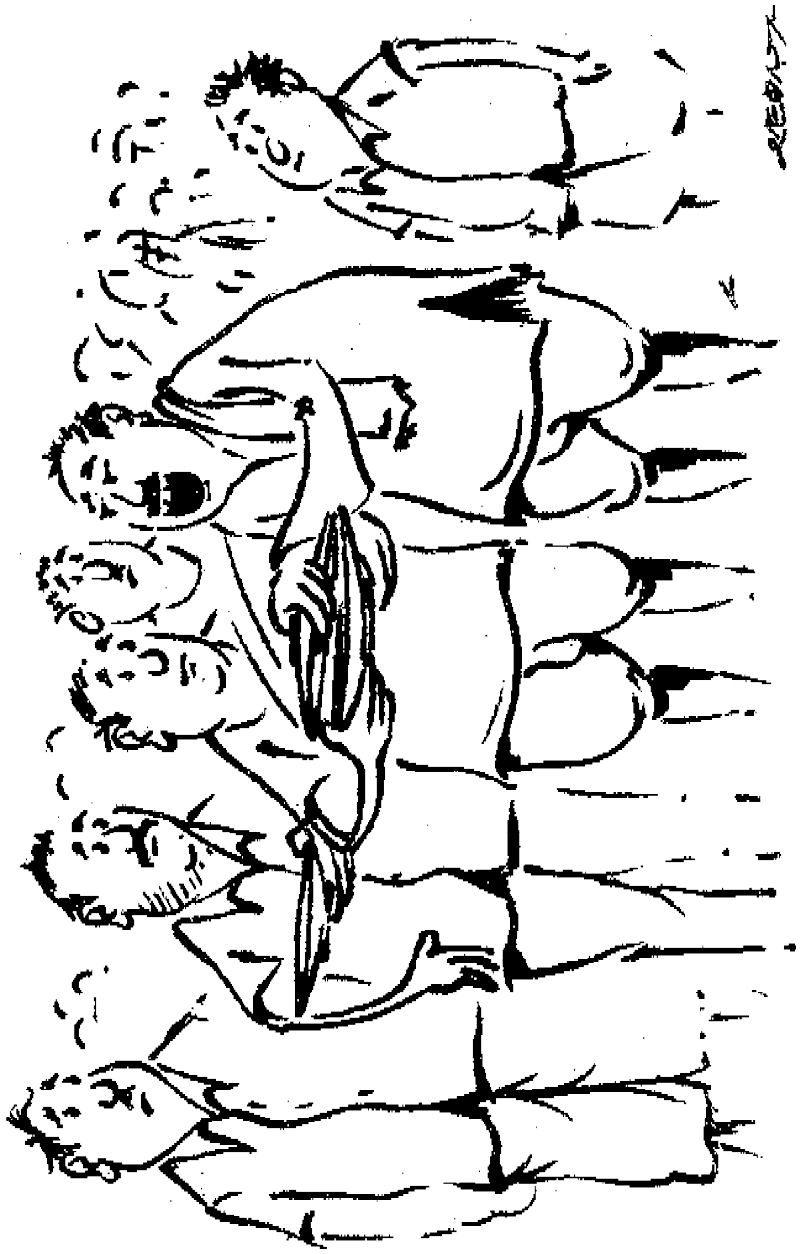

हुए यह लो भाई, पकड़ो, (तीसरी प्लेट 'तीन' को)

(प्याले के पानी में से एक च मच पानी लेकर 'एक' वाली प्लेट में डालता है– इसी तरह एक च मच पानी लेकर 'दो' वाली प्लेट में डालता है। तीन से तीसरी प्लेट लेकर 'एक' वाली प्लेट को ढँक लेता है। फिर भीड़ से)

अब आपलोग बतलाओ कि यह जिस प्लेट में पानी ढँका है और जिसमें वह खुला है–घंटे भर बाद इनका □या हश्र होगा ?

एक – ओ बंधु ! यह □या नाटक कर रहा है तू ?

(भीड़ में से एक आदमी उठ कर–''नाटक ही तो करना है भाई ! तुझे ठीक नहीं लगता तो बैठ जा। ला मुझे दे।'')

पाँच – मैं बतलाऊँ कि यह □या नाटक है ! नाटक का कोई नाम तो होना चाहिए – चलो, इसे कहते हैं –ताप, भाप और आप। (लोग हँसते हैं)

वैसे मेरी बेटी की किताब में कुछ ..... (सोचते हुए)– बास्पीकरन .... ऐसा ही कुछ लिखा है। बड़े मुश्किल ल ज हैं भाई !

दो – पर भाई ! तेरा यह सवाल तो कोई भी बूझ लेगा। इसमें ज्ञान की बात □या ?

(दो चार और लोग–''हाँ, हाँ, यार मजा नहीं आया।'')

पाँच – बात इसमें यह है कि यह जो पानी खुला है – यह तो हम सब

जानते हैं कि यह उड़ जाएगा–मैं कहता हूँ कि इसमें कुछ हमारे लिए सीखने की बात है कि हम भी कहीं ऐसे उड़ न जाएँ।

(लोगों के माथों पर आश्चर्य के तेवर – एक दूसरे के प्रति आश्चर्य की मुद्राएँ)

चार – लो, यह तो पागल ही हो गया, गाँव को ही उड़ा दिया। मुझे तो यही नहीं समझ में आया कि पानी कैसे उड़ेगा?

दो – ुली प्लेट का तो पानी उड़ेगा। पर ढँकी प्लेट से €यों नहीं उड़ेगा – उसका भी उड़ेगा!

(लोगों में आपस में बहस – मशविरा)

पाँच – ना, ना, ना! हम सब जानते हैं भाई – भई, हम हवा में कपड़े सुखाते हैं न? वह तो पानी उड़ने के लिए ही सुखाते हैं। अगर उनको बाल्टी में रख ऊपर से ढक्कन लगा दें तो या वो सूखेंगे? ऐसी है यह बात!

एक – बात तो ठीक है, पर यह है या? ऐसा यों होता है?

पाँच – मेरी बेटी ने कहा कि पानी जो है, वह भाप बनता रहता है। जैसे पानी उबालने से होता है न!

दो – पर यहाँ किसने पानी उबाला!

पाँच – हाँ, उबालने पर तो ताप की वजह से भाप बनता है। ऐसा है कि जब नहीं भी उबालो, तो भी थोड़ा–सा पानी भाप बनता है। और जो भाप है न, वह भी पानी बनती रहती है। हवा आई तो भाप उड़ गयी और इस तरह से धीरे–धीरे सारा पानी गायब!

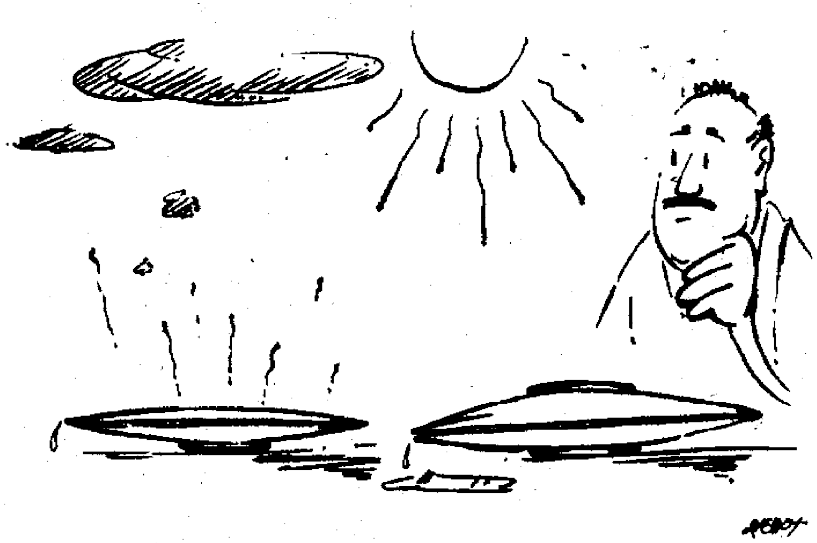

(थोड़ा रुक कर) .. यही बात हमारे गाँव की भी है। अगर गाँव में भुखमरी हो तो हम सब शहर चले जाएँगे, पर गाँव खुशहाल हो, तो कुछ लोग शहर जाते हैं और शहर गए कुछ लोग वापस भी आते हैं।

एक – तो ढँकने से भाप नहीं बनता □या ?

पाँच – हाँ, हाँ, पर ऐसा है कि बर्तन खुला हो तो जितनी भाप बनती है, वह हवा के साथ बह जाती है। ढँके बर्तन में ऐसा होता है नहीं। खुले बर्तन में बस पानी से भाप बनती है और हवा उसे खा जाती है। वापस तो पानी बनता ही नहीं। अब जैसे इस प्लेट को देखो – यह करीब-करीब सूख ही गया है न ?

(सभी उचककर देखते हैं।)

एक – यह कौन सी नई बात है ?

दो – चलो, ढँकी प्लेट उठाओ...

पाँच – हाँ, हाँ, □यों नहीं ?

('एक' की प्लेट का ढक्कन, यानी दूसरी प्लेट हटा ली गई, तो सभी देखते हैं कि नीचे की प्लेट अभी भी गीली है।)

पाँच – तो भाई, मेरे दिमाग में आइडिया यह आया है कि आजकल के छोकरे जो टी. वी. देख-देखकर सब शहर भागते हैं न – यह भी एक हवा है न ?

एक – तो उनको किस प्लेट से ढँकें– जवान बेटों का तो काम ही यही है ? बाहर जाएँगे, धन कमाएँगे। अरे शहर में उनकी □या औकात ! वह एक दिन लौटकर आएँगे ही !

पाँच – यह भी एक ढक्कन है – कमजोरी – पर नहीं, ऐसे नहीं। वे

लौटें इसलिए कि गाँव में खुशहाली है। हमारा ढक्कन हमारे गाँव की संपन्नता हो। अगर कुछ लोग यहाँ से चले भी गए तो कुछ बाहर से भी आ बसें। हमारी ढँकने वाली प्लेट तो भाइयों,

एक – लो, यह तो लीडर ही बन गया।

चार – पर बात तो इसने पते की की है।

तीन – मान गए भाई, असली पढ़ा-लिखा तो तू ही है।

पाँच – नहीं भाई, पढ़ती तो मेरी बेटी है। यह तो थोड़ी समझ मुझे मिली कि उसकी बातों को सुनूँ और कोई आगे की बात सोचूँ।

(भीड़ में से उठता आदमी – ''चलो भाई, आज का नाटक यहीं खत्म।'')

(समवेत शोर और तालियों के बीच सामूहिक नृत्य और गीत।)

भाप, ताप और आप की यही है कहानी।
मिल-जुल कर लिखें अपनी जिंदगानी,
गाँव हमारा सुखी बने, सुखी रहें सबलोग,
ाईचारा, खुशहाली हो, खुश हो हवा-पानी।

oooo